

प्लेटो का शिक्षा दर्शन

प्लेटो के दार्शनिक विचार

- 1-विचार ही मौलिक एवं शाश्वत तत्व है।
- 2-समस्त दृश्य जगत विचारों की छाया मात्र है।
- 3-सत्यम शिवम एवं सुंदरम तत्व है।

ज्ञान का स्वरूप

ज्ञान का रूप निर्णय करने में सोफीस्टो तथा सुकरात ने पर्याप्त संघर्ष का प्रदर्शन किया। कुछ का कहना था कि हम अपनी पांचों इंद्रियों से जो कुछ अनुभव प्राप्त करते हैं वह ज्ञान है, दूसरों को इस बात पर संदेह था क्योंकि इंद्रियों द्वारा अनुभव किया हुआ ज्ञान कभी-कभी असत्य प्रमाणित हो जाता है। प्लेटो ने ज्ञान के तीन भेद किए हैं अभिप्राय यह है कि उसने तीन स्रोत से स्वीकार करें हैं।

- 1-इंद्रियों द्वारा प्राप्त ज्ञान
- 2-सम्मति द्वारा प्राप्त ज्ञान
- 3-विवेकाअर्जित ज्ञान

आत्मा और शरीर-

प्लेटो के अनुसार आत्मा के 3 अंश होते हैं 1-तष्णा 2- विवेक 3-ग्रती

प्लेटो शरीर और आत्मा की अमरता में अखंड विश्वास रखता था

प्लेटो के शैक्षिक विचार

प्लेटो ने शिक्षा को एक महान वस्तु माना है उन्होंने अपने ग्रंथ दि लॉज में कहा है, शिक्षा प्रथम तथा श्रेष्ठतम वस्तु है जिसे सर्वोत्तम व्यक्ति ही प्राप्त कर सकते हैं। प्लेटो का विश्वास था कि बालकों को नैतिकता या सद्गुण सीख लाया जा सकता है। उन्होंने केवल चार सद्गुणों बुद्धिमत्ता, संयम साहस , तथा न्याय को स्वीकार किया है।

प्लेटो के अनुसार शिक्षा का उद्देश्य

- 1-शाश्वत मूल्यों का ज्ञान
- 2-शारीरिक या मानसिक शक्तियों का विकास
- 3-नागरिक कुशलता का विकास करना
- 4-विवेक का विकास करना

5-संतुलित व्यक्तित्व का निर्माण

6-बालकों को सामंजस्य पूर्ण जीवन जीने के लिए तैयार करना

7-राज्य की एकता को स्थापित करना

प्लेटो के अनुसार शिक्षण विधियां

1- तर्क या वाद विवाद विधि

2-वार्तालाप विधि

3-स्वाध्याय विधि

4-खेल विधि

5-तार्किक विधि

6-प्रश्नोत्तर विधि

7-अनुकरण विधि

8-प्रयोगात्मक विधि

प्लेटो के अनुसार शिक्षक की भूमिका

प्लेटो ने स्वयं अपनी अकादमी में एक आदर्श शिक्षक के रूप में कार्य किया है उनके गुणों एवं आदर्शों को ध्यान में रखते हुए एक आदर्श शिक्षक के गुणों एवं कर्तव्यों का निर्धारण किया जा सकता है एक शिक्षक से आदर्श गुणों की अपेक्षा करते हैं और आशा करते हैं कि वे अपने इन आदर्श गुणों के कारण अपने महान कर्तव्यों का निष्ठा पूर्वक पालनकर्ता चलेगा।

प्लेटो के अनुसार विद्यालय

प्लेटो एक निश्चित स्थान पर शिक्षा प्रदान करने का समर्थक था उसने विद्यालय को एक मानवीकरण तथा सामाजिकरण करने वाली संस्था माना है जिसका प्रमुख कार्य बालकों को सहयोगी एवं सामुदायिक जीवन व्यतीत करने की कला सिखाना है।

प्लेटो के अनुसार अनुशासन

प्लेटो ने शारीरिक सामाजिक मानसिक तथा आदेशात्मक अनुशासन का समर्थन किया है।

शिक्षा के क्षेत्र में प्लेटो का योगदान

1-शिक्षा विधि के क्षेत्र में अतुलनीय योगदान

2-बच्चों की रुचि आवश्यकता है तथा बुद्धि शक्ति और सामर्थ्य के ऊपर शिक्षा और निर्देशन दिया जाता है।

3-आज भारतीय शिक्षा में जो नवीन दृष्टिकोण से सुधार हुआ है यह सब प्लेटो के शिक्षा सिद्धांत का प्रभाव है।

4-शिक्षा में व्यायाम एवं संगीत को विशेष ध्यान दिया।

5-आज के शिक्षक को महान दार्शनिक शासक नेता कर्णधार का स्थान देकर शिक्षक का महत्व बढ़ाया।

गुण

1-प्लेटो ने शिक्षा योजना में आध्यात्मिक मानसिक तथा शारीरिक विकास का पूरा ध्यान रखा है ताकि व्यक्तित्व का सामंजस्य पूर्ण विकास हो सके।

2-राज्य का प्रमुख कर्तव्य शिक्षा की व्यवस्था करना है।

3-उन्होंने स्त्री एवं पुरुषों के लिए समान शिक्षा पद्धति को उचित बताया।

4-शिक्षा के द्वारा व्यक्ति के लिए नैतिक और आध्यात्मिक विकास हो।

5-आज की शिक्षा एवं शिक्षा शास्त्री प्लेटो के शिक्षा सिद्धांत से प्रेरणा प्राप्त करते हैं।

दोष

1-प्लेटो ने व्यावसायिक शिक्षा की उपेक्षा कर दी है।

2-उसकी शिक्षा योजना मुख्य रूप से शासकों और प्रशासकों के लिए थी।

3-निर्धन वर्ग को शिक्षा का लाभ ना के समान नहीं प्राप्त हुआ।

4-प्लेटो ने दास प्रथा से संबंधित कोई निश्चित धारणा नहीं बताई।

5-उन्होंने गणित को विशेष महत्व दिया जबकि कला साहित्य व्यवहार कला और साहित्य विषयों को अधिक प्रशासित करने की कोशिश नहीं की।